अपने विवेक से ''हाथ'' मिलाएं

जब यीशु मन्दिर में सिखा रहा था, तो ग्रन्थी और फरीसी उसके सामने एक औरत को लेकर आए जो व्यभिचार करते पकड़ी गई थी। यीशु को फंसाने की कोशिश में, वे कहने लगे, ''हे गुरु, यह स्त्री व्यभिचार करते ही पकड़ी गई है। व्यवस्था में मूसा ने हमें आज्ञा दी है कि ऐसी स्त्रियों को पत्थरवाह करें: सो तू इस स्त्री के विषय में क्या कहता है?'' (यूहन्ना 8:4, 5)। यीशु ने उत्तर दिया, ''तुम में जो निष्पाप हो, वही पहिले उसको पत्थर मारे'' (आयत 7ख)। यीशु की यह बात सुनकर, ''बड़ों से लेकर छोटों तक एक-एक करके निकल गए'' (आयत 9क)। वे वहां से क्यों निकले? KJV में एक व्याख्या जोड़ी गई है: ''और जिन्होंने यह सुना, *अपने ही विवेक से दोषी ठहरकर,* बड़ों से लेकर छोटों तक एक-एक करके निकल गए।''[1]

हम में से अधिकांश लोग समझ सकते हैं कि वाक्यांश ''अपने ही विवेक से दोषी'' का क्या अर्थ है। जब हमारी बेटी एंजी छोटी थी, तो वह अक्सर मुझे अपनी दिन भर की शरारतों के बारे में बताने के लिए जो उसे सोने नहीं देती थीं, आधी रात को उठा देती थी। हममें से हर कोई याद कर सकता है कि कब हमने झूठ बोला था, परीक्षा में नकल की थी, कोई ऐसी वस्तु ली जो हमारी नहीं थी, या कुछ और गलत काम किया हो और हमारे विवेक ने ''हमें दोषी ठहराया हो।''

विवेक के बारे में बाइबल बहुत सी बातें बताती है। ''विवेक'' शब्द पुराने नियम में कहीं नहीं मिलता,[2] परन्तु इसकी धारणा आदम और हव्वा से ही है, जो परमेश्वर से इसलिए छुपे थे क्योंकि उन्होंने आज्ञा तोड़ी थी (उत्पत्ति 3:8)। यूसुफ को दासता में बेचने के वर्षों बाद, उस निर्दयी कृत्य का स्मरण उनके भाइयों का पीछा कर रहा था (उत्पत्ति 42:21)। कब दाऊद द्वारा शाऊल का कपड़ा काटने पर, शास्त्र ने टिप्पणी की कि ''इसके पीछे दाऊद शाऊल के बागे की छोर काटने से पछताया'' (1 शमूएल 24:5क)।

नये नियम में, ''विवेक'' शब्द पूरी तरह प्रभावशाली हो जाता है। नये नियम में यह बहुत से शब्दों से जिनका अध्ययन किया जाता है, अधिक बार अर्थात बत्तीस बार मिलता है।[3] केवल पौलुस के लेखों में ही यह इक्कीस बार (यदि इब्रानियों की पत्री का लेखक वही है तो छब्बीस बार) मिलता है।

विवेक के बारे में, बाइबल की शिक्षा का अध्ययन करना बहुत ही महत्वपूर्ण बात है। आरम्भ करने के लिए यह पूछना, अच्छा है कि ''विवेक क्या है?''

विवेक की परिभाषा

आइए संक्षेप में यह ध्यान देते हुए आरम्भ करते हैं कि विवेक क्या *नहीं* है।[4] पहली बात, विवेक अपने आप में, धर्म का कोई सुरक्षित गाइड *नहीं* है। जब पौलुस यहूदी महासभा के सामने खड़ा था, तो उसने कहा, ''हे भाइयो, मैंने आज तक परमेश्वर के लिए बिल्कुल सच्चे विवेक से जीवन बिताया है'' (23:1ख)। पौलुस जब मसीही लोगों को सता रहा था, तब भी उसके विवेक ने उसकी सराहना की थी।

फिर, विवेक ज्ञान या व्यवस्था *नहीं* है। बल्कि, यह उस ज्ञान और व्यवस्था पर आधारित काम करता है जो हमारे पास है।

फिर, विवेक ''मनुष्य में परमेश्वर की आवाज़'' *नहीं* है। वर्षों पूर्व लेखक यही मानते थे; वे विवेक को प्रभु की ओर से ''दबा हुआ धीमा शब्द'' (1 राजा 19:12) मानते थे। बाइबल सिखाती है कि बेशक विवेक परमेश्वर की ओर से दिया गया है, परमेश्वर इसका इस्तेमाल करता है, और मनुष्य को पाप से दूर रखने के लिए यह परमेश्वर की योजना का एक भाग है, परन्तु यह मनुष्य के अन्तर्मन की ही आवाज़ है।

यह एक वास्तविकता है

अपने विषय के सकारात्मक पक्ष की ओर मुड़ते हुए, हम पूछते हैं, ''विवेक *है* क्या?''

पहले मैं यह ज़ोर देता हूं कि विवेक एक वास्तविकता है। कुछ लोग विवेक का अस्तित्व होने से इन्कार करते हैं। नास्तिक और संदेहवादी दार्शनिक विवेक को नकारते हैं क्योंकि यह परमेश्वर के अस्तित्व और आत्मिक जगत का ऐलान करता है। (थॉमस वारेन ने नास्तिक एंथनी फल्यू से बहस करते हुए टिप्पणी की कि अधिकतर लोग सहमत हैं कि कुछ कार्य सही होते हैं और कुछ गलत। एक उदाहरण के रूप में, उसने यहूदियों के साथ हिटलर के व्यवहार की विश्वव्यापी निन्दा की बात की। फिर वारेन ने इस विश्वव्यापी नैतिक विवेक से परमेश्वर के होने का तर्क दिया, जिसने इसे हमारे भीतर रखा।)

मानवतावादी मनोवैज्ञानिक भी विवेक की वास्तविकता को नकारते हैं, क्योंकि विवेक कहता है कि कुछ कार्य बिल्कुल ही सही हैं और कुछ बिल्कुल गलत। विवेक यह घोषणा करता है कि दोष वास्तविक है और उसका सामना करना चाहिए, केवल उसका इन्कार या उपेक्षा करना ठीक नहीं।

दूसरे लोग विवेक नामक किसी वस्तु के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं परन्तु इसके महत्व को कम कर देते हैं। कई लोगों का कहना है कि विवेक *हमारे पीछे* से अर्थात हमारे स्नायुतन्त्र के किसी विकार से उत्पन्न मानसिक विकृतियों के एकत्र होने से आता है। कइयों का कहना है कि विवेक *हमारे आस-पास* से आता है अर्थात जो कुछ हमारा समाज गलत या सही कहता है। कइयों का कहना है कि विवेक *हमारे भीतर* से आता है

अर्थात जो कुछ हमने अच्छा-बुरा अनुभव किया है, यह उस पर हमारी प्रतिक्रिया है। (ये सभी घटक विवेक के बारे में शिक्षित या कुशिक्षित करने में योगदान देते हैं, परन्तु वे स्वयं विवेक के मूल की व्याख्या नहीं करते।)

विद्वान लोग कुछ भी कहें (देखिए 1 कुरिन्थियों 1:21), परन्तु अनुभव तथा बाइबल दोनों ही बताते हैं कि विवेक बिल्कुल वास्तविक है और यह केवल परमेश्वर की ओर से ही मिलता है। यह हमारे पीछे से, बाहर से, या भीतर से नहीं, बल्कि *हमारे ऊपर* से आता है। विवेक का होना परमेश्वर के स्वरूप में होने की मूल शर्त है (उत्पत्ति 1:27)। विवेक हर किसी को दिया गया है (रोमियों 2:13-15); यह एक विश्वव्यापी सच्चाई है।[5] संदेहवादी बर्नार्ड शॉ को भी यह निष्कर्ष निकालना पड़ा था कि विवेक ''एक साधारण मनुष्य की सजावट का एक भाग है और यह अपने काम में कभी असफल नहीं होता।'' किसी ने कहा है, ''कोई भी ईमानदार व्यक्ति विवेकपूर्ण ढंग से विवेक के अस्तित्व का इन्कार नहीं कर सकता।''

यह ''नैतिक चेतना'' है

यद्यपि हम मानते हैं कि विवेक का अस्तित्व है, परन्तु मनुष्य के भीतरी पहलुओं से इसकी निकटता के कारण इसकी परिभाषा देना आसान नहीं है। तीतुस 1:15 में मन (बुद्धि) और विवेक एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। इच्छा तथा विवेक का आपसी सम्बन्ध है प्रेरितों (23:1 और 26:9 की तुलना कीजिए) विशेषकर मन (भावना) और विवेक का सम्बन्ध है। NASB में 1 शमूएल 24:5 का अनुवाद इस प्रकार है, ''दाऊद के *विवेक* ने उसे परेशान किया,'' परन्तु मूल इब्रानी अनुवाद में है ''दाऊद के *मन* ने उसे सताया'' (देखिए KJV)। दोबारा, जब पतरस के प्रवचन ने पिन्तेकुस्त के दिन अपने सुनने वालों के विवेक को स्पर्श किया, तो शास्त्र कहता है कि ''सुननेवालों के *हृदय* छिद गए'' (प्रेरितों 2:37क)। फिर भी, पौलुस ने विवेक को अलग रखा और इसके विशेष कार्यों पर बात की। इस कारण हमें पूछना चाहिए, ''विवेक क्या है?''

बहुत से लोग विवेक की धारणा से संघर्ष कर चुके हैं। एक ने कहा, ''यह वह वस्तु है जिसकी जब पीड़ा होती है बाकी सब को अच्छा लगता है।'' किसी और ने कहा, ''यह छोटी सी भीतरी आवाज है जो आपको बताती है कि आन्तरिक राजस्व सेवा आपके आयकर रिटर्न को चैक कर सकती है।'' एक छोटे लडके ने कुछ ऐसी ही बात कही: ''यह आपके अन्दर एक ऐसी वस्तु है जो आपकी बहन को आपकी शिकायत मां को बताने से पहले आपको ही बताने के लिए प्रेरित करती है कि आपने गलती की है।'' एक कौमिक की किताब में चुटकुला था, ''विवेक आपको गलती करने से दूर नहीं रखता, बल्कि आपको उसका आनन्द लेने से दूर रखता है।'' हक्कलबैरी फिन[6] ने निष्कर्ष निकाला कि विवेक ''किसी व्यक्ति के भीतर सबसे अधिक जगह घेरता है।''

यूनानी शब्द का अनुवाद ''विवेक'' नये नियम के समय में यूनानी भाषा का एक

साधारण शब्द था; परन्तु इसका इस्तेमाल केवल बोलचाल की भाषा में किया जाता था, विद्वानों या कानून की भाषा में नहीं। यूनानी लोगों द्वारा बोलचाल की भाषा में प्रयुक्त करने पर, इसका अर्थ था ''वह कष्ट जो गलती करने पर आपको होता है।'' पौलुस ने इस सरल शब्द को लेकर पवित्र आत्मा की प्रेरणा से इसे नये नियम में विशेष शब्द में शोध दिया।

अनुवादित शब्द ''विवेक'' का यूनानी शब्द *suneidesis* उस शब्द जिसका अर्थ ''जानना'' (*oida*) हो सकता है, के साथ ''साथ'' या ''इकट्ठे'' (*sun*) के लिए शब्द को मिलाता है। विवेक के लिए अंग्रेज़ी शब्द ''conscience'' का अर्थ बिल्कुल यही है; यह लातीनी भाषा से आया है, और *con* (''साथ'' या ''इकट्ठे'') के साथ *scio* (''जानना'') को मिलाता है। अंग्रेज़ी और यूनानी दोनों शब्दों का अर्थ ''के साथ या इकट्ठे जानना'' है। दोनों ही अपने साथ और अपने भीतर जानने की योग्यता की बात करते हैं;[7] वे भीतरी जागरूकता की बात भी करते हैं जो हमें अपने बारे में जानने में सहायक होती है।

शब्दकोष में, अर्न्ड्ट और गिंग्रिच ने *suneidesis* शब्द को ''नैतिक विवेक'' के रूप में परिभाषित किया था।[8] थेयर'ज़ लैक्सिकन में अधिक लम्बी परिभाषा है: ''नैतिक तौर पर अच्छे और बुरे में अन्तर करने वाली आत्मा, जो किसी को पहले वाली बात करने और दूसरी को छोड़ने के लिए प्रेरित करती है, एक की सराहना करती है, जबकि दूसरे की निन्दा।''[9] अपनी शब्द अध्ययन पुस्तक में वाइन ने विवेक की थेयर से मिलती-जुलती परिभाषा दी: ''विचार की वह प्रक्रिया जो उसमें अन्तर करती है जिसे यह नैतिक तौर पर अच्छा या बुरा मानती है, अच्छे की सराहना व बुरे की निन्दा करते हुए यह पहले वाले को उत्साहित और दूसरे से परहेज करती है।''[10]

अर्न्ड्ट और गिंग्रिच की बात सम्भवत: उतनी ही निकट है जितना ''विवेक'' शब्द की परिभाषा देते हुए हम ''नैतिक विवेक'' पर आ सकते हैं। परन्तु, विवेक को समझने के लिए, हम वही करने के लिए बाध्य होते हैं जो थेयर और वाइन ने किया अर्थात जो कुछ यह *करता* है उसकी व्याख्या करके इसकी परिभाषा दें।

विवेक की व्याख्या

बाइबल के अनुसार, विवेक के दो मुख्य कार्य हैं जिनमें से एक मुख्य है दूसरा गौण। इन कार्यों के सम्बन्ध में, विवेक की तुलना शारीरिक नाड़ी तन्त्र से की जा सकती है। आत्मा के लिए विवेक का महत्व वही है जो देह के लिए नाड़ी तन्त्र का है। नाड़ी तन्त्र के मुख्य उद्देश्यों पर विचार कीजिए: यह शरीर को ख़तरे से चौकस करता है (उदाहरण के लिए: ''वह गर्म है'') और यदि शरीर उसकी चेतावनी की ओर ध्यान नहीं देता तो यह उसे दण्ड देता है (''इससे घाव हो जाता है'')। इसके गौण उद्देश्य के सम्बन्ध में, नाड़ी तन्त्र दूसरों को ख़तरे की चेतावनी देने के लिए प्रेरित करता है (''बच्चो, आग से दूर रहो, नहीं तो जल जाओगे!'')। विवेक यही करता है।

यह अन्तर करके निर्देश देता है

विवेक का पहला कार्य हमें सही काम करने के लिए उत्साहित करते हुए यह बताना है कि क्या सही है और क्या गलत। इब्रानियों 5:14 ''भले बुरे में भेद करने'' को, विवेक का एक कार्य बताता है। इस कार्य की सबसे अच्छी चर्चा शायद रोमियों 2:13-15क में है:

> क्योंकि परमेश्वर के यहां व्यवस्था के सुननेवाले धर्मी नहीं, पर व्यवस्था पर चलनेवाले धर्मी ठहराए जाएंगे। फिर जब अन्यजाति लोग जिन के पास व्यवस्था नहीं, स्वभाव ही से व्यवस्था की बातों पर चलते हैं, तो व्यवस्था उनके पास न होने पर भी वे अपने लिए आप ही व्यवस्था हैं। वे व्यवस्था की बातें अपने-अपने हृदयों में लिखी हुई दिखाते हैं।[11]

सब लोग स्वाभाविकता से ही जानते हैं कि कुछ काम सही हैं और कुछ गलत-वे भी जो परमेश्वर के लिखित नियमों को नहीं जानते। उदाहरण के लिए, लगभग प्रत्येक समाज में चोरी और हत्या के विरुद्ध नियम हैं। मनुष्य के भीतर ऐसा क्या है जो उसे यह नैतिक न्याय करने को कहता है ? आयत में आगे कहा गया है: ''उनके *विवेक* भी गवाही देते हैं'' (आयत 15ख)। सही या गलत के बारे में ''गवाही'' देना विवेक का पहला कार्य है। यह वही कार्य है जब हम कहते हैं, ''शुद्ध विवेक से, मैं, ऐसा नहीं कर सकता।''

यह निर्णय और दण्ड देता है

विवेक का दूसरा मुख्य कार्य हमारा न्याय करना है और यदि हम इसके मना करने पर वह काम करते हैं या उस काम को करने में असफल होते हैं जिसके लिए यह हमें उत्साहित करता है तो हमें दण्ड देता है। विवेक हमें अपने आदेशों को मानने के लिए बाध्य नहीं कर सकता, परन्तु इसकी बात मानने या न मानने पर यह हमें उसका पुरस्कार या दण्ड दे सकता है। यह न्यायाधीश, गवाह और निर्णायक मण्डल सब कुछ है, और तुरन्त निर्णय दे देता है। फिर यह जल्लाद है, जो न्यायालय द्वारा दिया गया दण्ड देता है। इस कारण, पौलुस ने अन्यजातियों के विवेकों को ''गवाह'' कहने के बाद, यह जोड़ा कि ''उनकी चिन्ताएं परस्पर दोष लगाती, या उन्हें निर्दोष ठहराती हैं'' (रोमियों 2:15ग)।

जीवन की सबसे बड़ी आशिषों में से विवेक एक है जो हमारी रक्षा करता और कहता है, ''तूने बिल्कुल सही किया है'' (देखिए रोमियों 9:1)। बाइबल इसे ''अच्छे विवेक'' (प्रेरितों 23:1; 1 तीमुथियुस 1:5, 19; 1 पतरस 3:16; इब्रानियों 13:18),[12] ''निर्दोष विवेक'' (प्रेरितों 24:16, 21), या ''शुद्ध विवेक'' (1 तीमुथियुस 3:9; 2 तीमुथियुस 1:3) का होना कहती है। फ्रांसीसी कहावत है: ''शुद्ध विवेक एक अच्छा तकिया है।'' किसी ने शुद्ध विवेक को ''स्वर्ग का पूर्व स्वाद'' कहा है।

शुद्ध विवेक ने पौलुस को भरोसा दिया और उसे आगे बढ़ने के योग्य बनाया। उसने कुरिन्थियों को बताया, ''क्योंकि हम अपने विवेक की इस गवाही पर घमण्ड करते हैं, कि जगत में और विशेष करके तुम्हारे बीच हमारा चरित्र परमेश्वर के योग्य ऐसी

पवित्रता और सच्चाई जो शारीरिक ज्ञान से नहीं, परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह के साथ था'' (2 कुरिन्थियों 1:12)। आश्वस्त होने से बढ़कर कोई बात किसी मनुष्य को सहारा नहीं देगी कि वह सही है। पतरस ने सताए हुए मसीहियों को निर्देश दिया: ''और विवेक भी शुद्ध रखो, इसलिए कि जिन बातों के विषय में तुम्हारी बदनामी होती है, उनके विषय में वे जो मसीह में तुम्हारे अच्छे मसीही चालचलन का अपमान करते हैं लज्जित हों'' (1 पतरस 3:16)।

दूसरी ओर, जीवन के अभिशापों में से सबसे बड़ा अभिशाप उस विवेक का होना है जो किसी को दोषी ठहराता है और कहता है, ''तूने तो बहुत गलत किया है।'' नीतिवचन 28:1क में बुद्धिमान ने दोषपूर्ण विवेक के दण्ड देने के स्वभाव की बात की: ''दुष्ट लोग जब कोई पीछा नहीं करता तब भी भागते हैं।'' यदि शुद्ध विवेक स्वर्ग का पूर्वस्वाद है, तो दोषपूर्ण विवेक नरक का पूर्वदर्शन।[13]

इब्रानियों के लेखक ने इस तथ्य पर चर्चा करते हुए कि मूसा की व्यवस्था और इसके बलिदान किसी ईमानदार व्यक्ति के विवेक से दोष के ज्ञान को दूर नहीं कर सके, दोषपूर्ण आरोप के बारे में काफ़ी कुछ कहा है (इब्रानियों 9:9, 14; 10:2)। इब्रानियों 10:22 में उसने दोषपूर्ण विवेक को ''बुरा विवेक'' कहा है। कुछ लेखकों का मानना है ''एक बुरा विवेक'' वह होता है जो ''उचित ढंग से काम नहीं करता,'' परन्तु मेरा सुझाव यह है कि जब यह, ''दोषी, दोषी, दोषी!'' पुकारकर लोगों पर आरोप लगाता है, तो यह वैसे ही काम कर रहा होता है जिसके लिए परमेश्वर ने इसे बनाया था।

बाइबल के इतिहास से, और हमारे अपने जीवनों से स्वनिन्दित लोगों के संताप की कहानियां बहुत हो सकती हैं। बाइबल के उदाहरणों के सम्बन्ध में, औरों के साथ हमारे विचार में कैन (उत्पत्ति 4:9), राजा शाऊल (1 शमुएल 26:21), राजा हेरोदेस (मरकुस 6:16), और यहूदा (मत्ती 27:3-5) आते हैं।

दोषपूर्ण विवेक वाले लोगों के कष्टों के उदाहरणों से इतिहास भरा पड़ा है। एक बार, किसी व्यक्ति की हत्या के मामले में सुनवाई के समय न्यायाधीश बैंच पर बैठा हुआ था। सुनवाई के दौरान, जज ने बैंच से उतरकर यह अंगीकार करते हुए कि वर्षों पहले, उसने एक व्यक्ति की हत्या की थी, न्यायालय में उपस्थित लोगों को चौंका दिया था। वह न्यायालय से भाग गया था और एक नये समाज में रहने लगा था, जहां पर उसने लोगों का भरोसा हासिल कर लिया था। उसने सम्पत्ति जोड़ ली थी, अच्छा नाम कमा लिया था और अन्ततः लोगों ने उसे एक न्यायाधीश के रूप में चुन लिया था। परन्तु, हत्या के मुकदमे के दौरान गवाही को सुनकर और उस आदमी के चेहरे को देखकर जिस पर मुकदमा चल रहा था, उसके विवेक ने जागकर उसे दण्ड दे दिया। उसने अपने अपराध में मुकदमे के लिए अधिकारियों के सामने आत्मसमर्पण कर दिया था।

हम सभी ने आरोप लगाने वाले विवेक के कोड़े का डंक सहा है। कुछ अधिक समय की बात नहीं है, किसी मसीही विद्यालय के एक शिक्षक को यह पत्र मिला:

मैं (इस) वर्ष आपका छात्र था। मैं आपकी ओल्ड टैस्टामेन्ट सर्वे की कक्षा में था। हमें अपने कोर्स के भाग के रूप में सम्पूर्ण पुराना नियम पढ़ना था। मैंने अपना पाठ्यक्रम यह दिखाने के लिए बदल दिया कि मैंने सभी पुस्तकें पूरी तरह से पढ़ ली हैं, परन्तु सत्य यह है कि मैंने दूसरे भाग की केवल 40% मलाई ही ली थी। मैंने 60% के लगभग पढ़ा तो था परन्तु समय समाप्त होने लगा और मैंने फिर वे सारी पुस्तकें पढ़नी छोड़ दीं। सो सच्चाई यह है कि मैंने पूरी तरह से पुराने नियम की पुस्तकें पढ़ने की बात झूठ कही थी। इस बात ने मुझे परेशान किया और तब से लेकर आज तक यह मुझे परेशान ही करती आ रही है। आखिर, इन्सान को किसी भी बात पर झूठ नहीं बोलना चाहिए। विशेषकर यह अब भयभीत करने वाला लगता है कि मैं बाइबल पढ़ने के बारे में झूठ बोलूं!

सो, मैं आपके सामने यह अंगीकार करना चाहता हूं और क्षमा मांगना चाहता हूं। और यदि आपको लगता है कि मेरे अंक कम किए जाएं तो आप (कॉलेज के नाम) से सम्पर्क करके जो आवश्यक हो, कर सकते हैं। दोबारा, मैं अपने इस शर्मनाक झूठ के लिए आपसे क्षमा मांगता हूं। मैंने बहुत बार प्रभु के सामने पश्चात्ताप किया है और उससे क्षमा मांगी है, परन्तु अन्त में मुझे लगा कि जब तक मैं आपके सामने पश्चात्ताप करके अंगीकार न करूं, मुझे चैन नहीं मिलेगा।

मेरा पत्र पढ़ने के लिए धन्यवाद। आशा है कि आय शीघ्र ही एक छोटा सा पत्र लिखेंगे यह बताने के लिए आपने मुझे क्षमा कर दिया है।

अपने विवेक की बात मानने में असफल रहने के परिणाम इतने अधिक खतरनाक हैं कि बाइबल विवेक का उल्लंघन न करने पर बहुत ज़ोर देती है (रोमियों 14:23;[14] प्रेरितों 24:16)। लगातार विवेक का उल्लंघन करना इसे परमेश्वर प्रदत्त कार्य करने के अयोग्य करना है (1 तीमुथियुस 4:2)।[15]

विवेक दूसरों की सराहना या निन्दा करता है

विवेक का गौण कार्य दूसरों द्वारा किए कार्य की सराहना या निन्दा करना है। अपना न्याय करने के अलावा, यह अपने बनाए सही और गलत मापदण्डों से दूसरों का न्याय भी करता है। इसे पहचानते हुए, पौलुस ने, आम तौर पर अपने पाठकों के विवेक से यह मानने का आग्रह किया कि वह सही था। उदाहरण के लिए, 2 कुरिन्थियों 4:2 में उसने लिखा कि यह तथ्य कि वह सच्चाई के अनुसार चलता था उसके जीवन की "परमेश्वर के साम्हने हर एक मनुष्य के विवेक में" सराहना होनी चाहिए। फिर उसने कहा, "मेरी आशा यह है, कि तुम्हारे विवेक पर भी [हमारा हाल] प्रकट हुआ होगा" (5:11)।

विवेक दूसरों की सराहना या निन्दा करता है, इसलिए निरपवाद रूप से विवेक का कार्य दूसरों के साथ हमारे सम्बन्धों को प्रभावित करता है। फिर हमें यह जानकर हैरानी नहीं होती कि विवेक से मामलों की गहन चर्चाएं सम्बन्धों, विशेषकर मसीहियों के आपसी सम्बन्धों की बात है (रोमियों 14; 15; 1 कुरिन्थियों 8–10)।[16]

सारांश

जैसे मैंने विवेक की परिभाषा दी है, आप भी इसकी वैसी ही परिभाषा दें या न दें, वैसे ही करें या न करें, लेकिन आप जानते हैं कि निम्न वाक्य सत्य हैं: विवेक का अस्तित्व सचमुच है; विवेक हमें बताता है कि क्या सही है और क्या गलत; विवेक की बात टालना और वैसा जीवन व्यतीत करना खतरनाक है! ये सत्य प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में बहुत गहराई तक लिखे हुए हैं।

अन्त में, आइए हम अपने आप से एक अन्तिम प्रश्न पूछें और उसका उत्तर दें: जब कोई व्यक्ति अपने विवेक की आज्ञा को न मानकर दोषी ठहरता है, तो वह क्या कर सकता है?

मनोविज्ञान के कुछ विद्यालयों का कहना है कि आप वास्तव में दोषी नहीं हैं, अत: दोष की भावना को नज़रअन्दाज कर दीजिए, इसे अपने मन से निकाल दीजिए और अपने पीछे रख लें। यह ढंग कार्य नहीं करता क्योंकि दोष फिर से हावी हो जाता है। मानवतावादी दर्शन कहता है कि आप में जो अच्छाई है वह आपकी बुराई पर हावी हो जाती है, सो जितने अच्छे बन सकते हैं, बनें और जो गलती आपने की है, उसकी चिन्ता न करें। परन्तु, वास्तव में, दोषी व्यक्ति तो अभी भी जानता है कि वह कब दोषी होता है।

दोष के लिए बाइबल का उत्तर उसे नज़रअन्दाज करना या अपने आपको इसके बाहर बात करने की कोशिश नहीं बल्कि यीशु के लहू के द्वारा इससे सदा के लिए छुटकारा पाना है! आत्मा की प्रेरणा से लेखक ने ज़ोर दिया, ''मसीह का लोहू ... तुम्हारे विवेक को मरे हुए कामों से क्यों न शुद्ध करेगा, ताकि तुम जीवते परमेश्वर की सेवा करो?'' (इब्रानियों 9:14)। जब हम अपने जीवनों को उसके सामने समर्पित करते हैं, तो ''हृदय पर छिड़काव लेकर और देह को शुद्ध जल से धुलवाकर'' (इब्रानियों 10:22) हमारे विवेक यीशु के लोहू से शुद्ध किए जाते हैं। बहुत से विद्वान मानते हैं कि ''शुद्ध जल से'' देह को धोना बपतिस्मे की ओर संकेत करता है। पतरस ने बपतिस्मे को ''शुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश में'' होना कहकर हमारे आज्ञा मानने और विवेक के शुद्ध होने को एक साथ मिलाया (1 पतरस 3:21ग)।

यदि आप शुद्ध विवेक की आशिषों को जानना चाहते हैं तो वही करें जो सही है, अर्थात आज ही प्रभु की आज्ञा मानकर उसे ग्रहण करें!

पाद टिप्पणियां

[1]''अपने ही विवेक से दोषी ठहरकर'' वाक्यांश सम्भवत: इस बात की व्याख्या करता है कि ग्रंथी तथा फरीसी क्यों छोड़ गए। [2]''विवेक'' शब्द KJV बाइबल की तरह हिन्दी के अनुवाद में पुराने नियम में नहीं मिलता, परन्तु NASB में एक बार मिलता है। [3]संज्ञा रूप के बत्तीस उपयोगों के अलावा, नये नियम में तीन बार क्रिया रूप ही मिलता है। [4]विषय के इस पहलू पर अगले पाठ में अधिक विस्तार से चर्चा की गई है। [5]अपनी चर्चा में, हम इस तथ्य पर भी विचार करेंगे कि विवेक को चुप कराया जा सकता है (इस प्रकार कई लोग तो ऐसे व्यवहार करते हैं जैसे उनमें विवेक ही न हो)। परन्तु, इस पाठ में हम यह ज़ोर देना चाहते हैं कि विवेक मनुष्य के भीतर ही है। [6]फिन-मार्कवेन की एक साहित्यिक रचना थी। [7]पुराने समय के लेखक यह निष्कर्ष निकालते थे कि ''विवेक'' *परमेश्वर* ''के साथ जानने'' को कहा जाता है, इसलिए ''हमारे भीतर ही परमेश्वर की आवाज'' का विचार बढ़ा। परन्तु जैसे पहले ही ज़ोर दिया जा चुका है, कि बेशक परमेश्वर ने मनुष्यों को विवेक दिया है परन्तु विवेक स्वयं व्यक्ति के भीतर परमेश्वर की नहीं बल्कि उसकी अपनी आवाज होती है। [8]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ द न्यू टैस्टामेन्ट एण्ड अदर अरली क्रिश्चियन लिटरेचर।* [9]जोज़ेफ एच. थेयर, *ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ द न्यू टैस्टामेन्ट*। [10]डब्ल्यू. ई. वाइन, *द ऐक्सपैन्डर्ड वाइन'ज़ ऐक्सपोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ न्यू टैस्टामेन्ट वर्डस*।

[11]इस पद का दुरुपयोग यह शिक्षा देने के लिए किया जाता है कि यदि मनुष्य ''अपने विवेक के अनुसार जीवन व्यतीत करे'' तो सब ठीक है। परन्तु, संदर्भ में पौलुस सिखा रहा था कि कोई भी व्यक्ति चाहे वह यहूदी हो जिसके पास व्यवस्था थी या अन्यजाति हो जिनके पास ''मन अर्थात विवेक की व्यवस्था'' थी उस प्रकाशन के अनुरूप जीवन नहीं बिताता है। उसका निष्कर्ष था कि ''सबने पाप किया और परमेश्वर की महिमा से रह गए हैं'' (रोमियों 3:23)। [12]दो अलग-अलग यूनानी शब्दों का अनुवाद ''सच्चा'' और ''अच्छा'' किया गया है। ''अच्छे विवेक'' के अधिकतर हवाले इन शब्दों में से एक *अगाथोस* का इस्तेमाल करते हैं। इब्रानियों 13 दूसरे अर्थात *कालोस* का इस्तेमाल करता है। सभी व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए, विवेक पर प्रासंगिक करने से दोनों शब्दों का अर्थ एक ही हो जाता है। [13]यीशु ने नरक का वर्णन एक ऐसी जगह के रूप में किया ''जहां उनका कीड़ा नहीं मरता'' (मरकुस 9:44, 46, 48)। ''न मरने वाला कीड़ा'' विवेक को ही कहा गया हो सकता है जो कभी दोष लगाने से नहीं रुकता। [14]अगले पाठ में इस आयत पर टिप्पणियां देखिए। [15]अध्ययन के इस पहलू पर अगले पाठ में अधिक विस्तार से जांच की गई है। यहां पर इसका उल्लेख सम्पूर्णता के लिए संक्षेप में किया गया है। [16]इस शृंखला का उद्देश्य इन अध्यायों को विस्तार से जानना नहीं है, परन्तु अगले पाठ के पहले पन्नों पर इनके बारे में काफ़ी कुछ बताया गया है।